Government Programs

Short Summary

1) Inculcated in the curriculum in School Education by SCERT, CG Govt.
2) Inculcated in the CTTL - DIET program by SCERT, Govt of Delhi
3) Fundamental base used for ‘Happiness Curriculum’ by School Dept, Govt of Delhi
4) Assessment done in Govt Schools in Maharashtra
5) Used in the curriculum at NIT, Raipur
6) Proposal in Grameen Vishwavidyalay, Chitrakoot
7) National Resource Center for Value Education in Engineering (NRCVEE) IIT Delhi
8) Experiments in Govt Engineering College (GEC, Bilaspur)
9) Human Values Courses based on ‘Jeevan Vidya’ are now part of the curriculum mandated by AICTE, Delhi. It is being implemented in more than 50 universitiesa and hundreds of colleges across India. Few places where it is being implemented are:

Institution	State	Institution	State
Satavahana University	AP	HP Technical University	HP
UP Technical University	UP	NIT, Raipur	Chattisgarh
Jawaharlal Nehru Agricultural University	MP	Galgotia University	Delhi
RV Scindia Agricultural University	MP	KL University	AP
Punjab Technical University	Punjab	Jawaharlal Nehru Technical Univ	AP
Royal University of Bhutan	Bhutan	IIIT, Hyderabad	AP
Rabindranath Tagore University	MP	College of Engineering, Roorkee	UK
Rajiv Gandhi Proudyogiki Vishwavidyalay	MP	PK University	MP

छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा विभाग

दुर्ग जिला प्रति

क्र. 4393 दिनांक 1.6.10

छत्तीसगढ़ शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय,
दाऊ कल्याण सिंह भवन रायपुर
===0===
// आदेश //

रायपुर, दिनांक ....

कमांक एफ 13–33/20–दो/2010 :: राज्य शासन एतद् द्वारा स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत चेतना विकास मूल्य शिक्षा के स्थायित्व एवं निरंतरता हेतु निम्नलिखित निर्देश प्रसारित करता है :–

1. चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ की स्थापना–

(i) एस.सी.ई.आर.टी.रायपुर में चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ की स्थापना जो संचालक, एस.सी.ई.आर.टी को रिपोर्ट करे तथा जिसका संचालन चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत व्यक्तियों व मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) अछोटी जिला–दुर्ग के सदस्य के मार्गदर्शन में हो।

(i) राज्य के सभी 2 लाख शिक्षकों को एडूसेट के माध्यम से चेतना विकास मूल्य शिक्षा से परिचित कराने की आवश्यकता है। अभी तक दो बार एक दिवसीय प्रशिक्षण, एक बार 7 दिवसीय प्रशिक्षण, 3 बार पांच दिवसीय प्रशिक्षण, एक बार 10 दिवसीय चेतना विकास मूल्य शिविर का संचालन एडूसेट के माध्यम से किया गया है। एडूसेट से 7 दिवसीय शिविरों का आयोजन उचित होगा।

इस प्रकार अभी तक लगभग 14000 शिक्षक, अधिकारियों, व्याख्याताओं एवं प्राचार्यों से एडूसेट के माध्यम से बातें हुई हैं। इसके उत्साहजनक परिणाम सामने आये हैं। अब अधिकांश लोग स्वेच्छा से आगे इसे और अधिक समझना चाहते हैं व अपने पूरे परिवार जनों व संबंधियों के साथ इसमें आना चाहते हैं।

9 कक्षा 1 से 10 वीं तक चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु प्रस्तावित दस पुस्तकें जीवन विद्या शिविरों के बाद वाचन सामग्री (Reading material) के रूप में सभी प्रतिभागियों को दी जाएगी।

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से
तथा आदेशानुसार

(विलियम कुजूर)
उप सचिव
छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग

श्री नंदकुमार जी, सचिव स्कूली शिक्षा, छत्तीसगढ़ राज्य की
श्रद्धेय श्री ए0 नागराज जी, प्रणेता - मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)
से भेंट

शिक्षा के मानवीयकरण पर चर्चा एवं मानवीय शिक्षा नीति का प्रस्ताव

दिनांक 7.11.2007 स्थान : अभ्युदय संस्थान, समय : सांय 3:15 बजे
दिनांक 9.11.2007 स्थान : श्री नंदकुमार जी का निवास, समय : सांय 6:30 बजे

15 शिक्षा सत्र 2008-2009 से समस्त शिक्षकों के प्रशिक्षण (पीजीबीटी एवं बीटी) में

लाभोन्मादी अर्थशास्त्र के साथ - साथ आवर्तनशील अर्थशास्त्र

भोगोन्मादी समाजशास्त्र के साथ - साथ व्यवहारवादी समाजशास्त्र

कामोन्मादी मनोविज्ञान के साथ - साथ मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

का अध्ययन शुरू कराया जाये। इस हेतु सत्र प्रारंभ होने के पहले वहां के सभी शिक्षकों को पारंगत बनाया जाए।

<u>प्रतिवेदन</u>

स्थायी समिति की बैठक, दिनाँक 06 अक्टूबर 2008

विषय शिक्षा स्थायी समिति की बैठक
दिनांक– 06 अक्टूबर 2008
स्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर

बैठक का उद्देश्य (एजेण्डा)– चेतना विकास मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम का शिक्षा स्थायी समिति द्वारा अनुमोदन प्राप्त कर इसे कक्षा 1–10 तक सहायक वाचक के रूप में सम्मिलित किये जाने हेतु समिति की अनुमति बाबत् बैठक का आयोजन किया गया ।

बैठक में उपस्थित सदस्य–

अध्यक्ष– श्री सच्चिदानंद जोशी, कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता वि.वि., रायपुर
सचिव– श्री नंदकुमार, सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग छ.ग.शासन एंव संचालक रा.शै.अनु. एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर
श्री सुभाष मिश्रा,महाप्रबंधक, छ.ग.पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर
श्री रमेन्द्रनाथ मिश्र, सदस्य, छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग, रायपुर
डॉ. श्याम सुन्दर मिश्र, श्री एन.के. ठाकुर, डॉ. निरूपमा शर्मा, डॉ. प्रफुल्ल शर्मा
श्री सूर्य कुमार पान्डेय– प्राचार्य, करूणा वर्मा–लोक शिक्षण संचालनालय, रायपुर,
श्री पी.के. पान्डेय–छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल रायपुर,
श्री सोम त्यागी, श्री अंजनी कुमार अभ्युदय संस्थान अछोटी, दुर्ग,
श्री एन.पी.कौशिक, संयुक्त संचालक, रा.शै.अनु.एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर,
श्रीमती ए. कुजूर, संयुक्त संचालक, रा.शै.अनु.एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर,
श्रीमती एस.एन. अली, श्रीमती वंदना अग्रवाल, शा.शिक्षा महाविद्यालय रायपुर,
श्रीमती अनुपमा नलगुण्डवार, श्री बी.आर.साहू, नीलम अरोरा एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम को स्कूल शिक्षा में सहायक वाचक के रूप में कक्षा 1–10 तक सम्मिलित किया जाना प्रस्तावित हैं। आज की बैठक इसी उद्देश्य से रखी गयी हैं। बैठक शिक्षा स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री सच्चिदानंद जोशी जी, कुलपति, कुशाभाऊठाकरे पत्रकारिता वि.वि. रायपुर की अनुमति से प्रारंभ हुई। <u>चेतना विकास मूल्य शिक्षा का स्त्रोत मध्यस्थ दर्शन यह अस्तित्ववाद है, जिसके प्रणेता</u> श्री ए. नागराज हैं। धरती पर [illegible]

चेतना विकास मूल्य शिक्षा, कार्यकम मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित निम्नलिखित आधारभूत शर्तो को पूरा करता हैं–

1 **पाठ्यक्रम दर्शन आधारित हैं। सार्वभौम मानवीय मूल्यों को व्याख्यान्वित करता हैं।**
2 **पाठ्यक्रम किसी भी प्रकार के अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, पूजन पद्धति से सर्वथा मुक्त हैं। किसी भी प्रकार के सम्प्रदायवाद एवं रहस्यवाद से मुक्त हैं।**
3 **पाठ्यकम तर्क आधारित हैं। प्रतिभागी तर्कपूर्ण ढंग से इसका प्रयोगों एवं विश्लेषण द्वारा परीक्षण कर सकते हैं।**
4 **इसके अध्ययन के लिए पुस्तकें उपलब्ध हैं।**
5 **इसे कार्य–व्यवहार में लाकर इसका परीक्षण किया जा सकता हैं।**

सचिव महोदय– चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रति सर्व सहमति बनी हैं। सभी ने इसे स्वीकार किया हैं। देर सवेर इसे शिक्षा में लाना ही हैं। हमारा राज्य नेतृत्व क्यों न करें? जहॉ तक इसे मुख्य धारा में लाने की बात हैं, हमारे किताबों की परिभाषाएँ और इनकी परिभाषाओं में कुछ भिन्नता हैं। मुख्य धारा में इसे सीधे लाने पर कुछ भ्रम की स्थिति हो सकती हैं। जब चेतना विकास मूल्य शिक्षा की किताबें लिखी जावेगी तब उनमें इस स्थिति को स्पष्ट किया जायेगा।

छत्तीसगढ़ शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय,
दाऊ कल्याण सिंह भवन रायपुर
===0===
//आदेश//

रायपुर, दिनांक 14.10.2008

क्रमांक एफ 1–75/2008/20–एक :: राज्य शासन एतद् द्वारा चेतना विकास मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम का शिक्षा स्थायी समिति द्वारा अनुमोदित अनुसार कक्षा 1–10 के सहायक वाचन के रूप में सम्मिलित किये जाने की स्वीकृति प्रदान की जाती है ।

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से
तथा आदेशानुसार

(बिबियाना तिर्की)
अवर सचिव
छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग

रायपुर, दिनांक 14.10.2008

पृ. क्रमांक एफ 1–75/2008/20–एक
प्रतिलिपि :–
1. निज सचिव, माननीय मंत्रीजी, छ0ग0शासन, स्कूल शिक्षा विभाग, मंत्रालय,रायपुर,
2. सचिव, छ0ग0शासन, स्कूल शिक्षा विभाग, मंत्रालय, रायपुर,
3. आयुक्त, लोक शिक्षण संचालनालय छत्तीसगढ़, रायपुर,
4. संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद रायपुर,
5. सचिव, छ0ग0 माध्यमिक शिक्षा मण्डल रायपुर,
6. महाप्रबंधक, छ0ग0 पाठ्यपुस्तक निगम रायपुर,
7. गार्ड फाईल,
की ओर सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु अग्रेषित ।

B. Tirkey 14.10.08
अवर सचिव
छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग

क्रमांक 12116
दिनांक 21.10.08

शासकीय राज्य शिक्षा विभाग, दिल्ली

Version 12. FINAL.

Annexure- 'A' 11/c

Curriculum & Syllabus Outline for
'Critical Thinking for Transformative Learning'
(Proposed course for D.EL.Ed in DIETs Delhi)

Prepared by Cell for Human Values & Transformative Learning, SCERT, Delhi

'Education in the true sense should empower individuals to clarify their values; to enable them to take conscious and deliberate decisions, taking into consideration the consequences of their actions, to choose the way of peace rather than violence; to enable them to be makers of peace rather than only consumers of peace.'

National Curriculum Framework, 2005

A. RATIONALE: Need for Critical Thinking for Transformative Learning, at DIETs Delhi

Modern Education makes a person more rational and is supposed to give us a framework for evaluation of our self, family, ecology, society, Nation and the entire human society. Each individual should learn his/her role in all of the above. This requires that we evaluate our self, family, ecology, society, nation and world without biases. Absence of this makes opinion-less, docile and passive individuals, who later go on to make a weak society.

This course is based on the philosophy *Madhyasth Darshan – Sahastitvavaad* (Co-existentialism) propounded by Shri A. Nagraj in the 1970s. The education component of this philosophy is known as *Chetna Vikas Mulya Shiksha* (Consciousness Development Value Education). Similar modules have also been tried extensively in the general population, in alternative and formal schools in the state of Chhattisgarh, and in higher education as a supplementary course in about 30 universities in India and Bhutan.

B. OBJECTIVES:

This course seeks to facilitate the student teachers to –

- Identify beliefs/notions/perceptions, think critically and develop the ability to critique (analysis without bias) them
- Evaluate notions (*mulyankan*) through logical reasoning and in the light of knowing to arrive at value-centric resolution
- Observe, examine, understand and value relationships from self to nature and society
- Understand critical thinking (analysis without bias - *sameeksha*) with the objective of transformative learning (learning in context of knowing; transforming for positive change)
- Be inspired for human consciousness
- Understand co-existence and the role of education in humane conduct, humane education and universal social order
- Achieve exemplary teaching conduct
- Have confidence to impart the above objectives in their students as well

C. METHODOLOGY

The course relies on introspection, observation, scrutiny, examination and survey of the human being vis-a-vis nature/existence. The content will be in the

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

Impact of In-service Teacher Training on Classroom Transaction

SSA INSET Packages in States: An Assessment

Principal Investigator

S.K. YADAV

2012

Department of Teacher Education
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
Sri Aurobindo Marg, New Delhi 110016

The study was funded by the
Committee for Approval of Research Projects (CARP)
MHRD, Government of India, Delhi (INDIA).

primary school teachers along with development of the training package was, therefore, outsourced to two private companies, Educomp Solutions and New Horizon India Ltd.

In the states of Jammu and Kashmir and Nagaland, combined training of primary and upper primary school teachers was the practice since most of the teachers taught classes at both stages of elementary education in schools. Even multigrade teaching was reported at both levels. In Maharashtra, value based training, *Jeewan Vidhya,* was considered relevant for primary as well as upper primary school teachers. The training needs in these states reflected system perceived needs rather than expressed needs of teachers arising out of TNA. It is not yet clear as to how specific needs of primary and upper primary teachers related to subject teaching were addressed by the SPO, SSA.

SSA INSET Guidelines

The assessment is based on the SSA 2008 guidelines for INSET. For ready reference the SSA guidelines given below were provided to the experts' group.

This chapter focused on the need for the assessment of the training packages in the 15 participating states and objectives of assessment. The methodology followed for the assessment was also outlined. The next chapter summarises the analytic exercise.

Jammu and Kashmir	• Inclusive Education, Community Mobilization, Disaster Management, Leadership Learning Disabilities, Right to Education (RTE), Right to Information Act, Health Disorders to School Children, Multigrade Teaching, Heritage Education, Peace Education and Vocational education, Subject Modules, Language Teaching (English), Language Teaching (Urdu), Pedagogy of Kashmiri, Pedagogy of Mathematics	SIE, Jammu and SIE, Srinagar	2009-10
Maharashtra	• *Jeewan Vidhya Part-I and II* (Marathi Version): An introduction *to Jeewan Vidhya*, Structure of life, Questions and Answers related to *Jeewan Vidhya*	Jeewan Vidhya Prakashan, Shri Bhajanashnam, Amarkantak	2008
Madhya Pradesh	*Samarthya* • Part- I: Multistage teaching, what, how, why TLM?, Examination and evaluation, SSA, Inclusive Education, Activity Learning Method, Activity Based Learning • Part-II: What, why, how activities?, Utility of Teaching Material, What is Evaluation, Example of Activities (according to subjects and classes)	MPSEC	2010
Nagaland	• Thematic Papers and Sessions Plans for the Mass Teachers Training	SCERT in	2002-03

Report citation from page #63

all 5,33,000 teachers.

Training in *Jeevan Vidhya* focusing on development of balanced and better human beings was organized in 2010-11. This 8-9 days training covered 3700 teachers and other district and block level functionaries in 33 district level programmes from October 2010 to February 2011. This training was provided by one intensively trained resource person for each of the programme. The resource persons received 9 months training in Chhattisgarh. In one of the programme at Mojhari in Amravati district 100 persons (64 special teachers, 8 mobile teachers, 19 district level functionaries, 2 block level functionaries, 2 speech therapists and 5 subject experts) received training. Aurangabad training *Shivir* included 49 KGBV headmistresses. In Paithan 27 primary and upper primary teachers received training while Solapur *Shivir* covered 84 (63 teachers, 12 BRC coordinators, 1 Education officer, 1 BDO and 4 principals.) Obviously, the size of the training *Shivir* and background of the trainees vary a lot. The training radically differs from other in-service training programmes as it did not address the issues and training needs in subject content and pedagogy as is done in most other states.

training package for Chhattisgarh at upper primary stage. Jeevan Vidya for Maharashtra was developed by Shri Bhajanashram, Amarkantak, Chhattisgarh.